जागरण विशेष

विश्व जनसंख्या दिवस (11 जुलाई)

कौशल विकास के प्रयासों से रोजगार सृजन को प्रदान कर रहे आधार

संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार वर्ष 2027 तक हम चीन को पीछे छोड़कर विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश हो जाएंगे। जनसंख्या वृद्धि किसी देश के विकास के लिए अवरोध मानी जाती है, लेकिन यदि देश के लोगों को नियोजित करने की दिशा में सही प्रयास हो तो यही बड़ी आबादी वरदान भी बन जाती है। इसी उद्देश्य से कौशल विकास और रोजगार सृजन की सरकारी योजनाओं के बीच निजी स्तर पर भी लोगों को नए कार्यों का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने और आर्थिकी मजबूत करने की दिशा में कुछ छोटे किंतु अहम प्रयास किए जा रहे हैं। विश्व जनसंख्या दिवस पर पढ़िए ऐसे ही दो सफल प्रयासों के बारे में :

'पराली आंत्रप्रेन्योर' बन 300 लोगों को दे रहे रोजगार

पंकज आत्रेय • कैथल

बढ़ती जनसंख्या के नियोजन में सामाजिक सहभागिता की अहम भूमिका होती है। इसे हरियाणा के कैथल जिले में गुहला के गांव रिवाड़ जागीर के किसान रामकुमार वाल्मीकि ने न केवल समझा बल्कि अंगीकार भी किया है। मात्र डेढ़ एक पुश्तैनी जमीन थी, एक कार्यक्रम में पराली के व्यावसायिक उपयोग की जानकारी मिली तो मन में नवाचार का विचार आया। खुद आगे बढ़े और अब 300 लोगों को भी काम सिखाकर रोजगार दे रहे हैं। वह एक साथ तीन सरोकारों-जनसंख्या नियोजन, पर्यावरण संरक्षण व गरीबी उन्मूलन को साध रहे हैं।

हरियाणा में कैथल जिले के गांव रिवाड़ में किसान रामकुमार से पराली प्रबंधन की जानकारी लेते कृषि विज्ञानी • सौ. स्वयं

उन्नतिशील किसान रामकुमार वाल्मीकि दूसरे किसानों के लिए उदाहरण पेश कर रहे हैं। उन्होंने इसके लिए एक ऐसे विचार पर कार्य किया जिससे पर्यावरण को भी लाभ है। खुद सीखने के बाद उन्होंने अन्य को भी पराली बेल बनाना सिखाया और रोजगार देकर सैकड़ों लोगों को आत्मनिर्भर भी बनाया है।

डा. कर्म चंद, उप निदेशक, कृषि एवं कल्याण विभाग, हरियाणा

रोजगार सृजन का भी था विचार: रामकुमार के पास मात्र डेढ़ एकड़ पुश्तैनी जमीन थी। कुछ ऐसा करने की योजना बनाई कि खुद की आर्थिकी भी मजबूत हो और अन्य को भी आत्मनिर्भर बनाने में सहायता कर सकें। इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए रामकुमार ने उस पराली को चुना जो दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का बड़ा कारण मानी जाती है। उन्होंने सोचा कि खेतों में खड़ी पराली से ही आय का अतिरिक्त स्रोत बनाया जाए। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अनुदान योजना में बेलर मशीन ली और खेतों में पराली के बेल बनाने शुरू किए। इन्हें वह पराली से बिजली व गत्ता बनाने वाली कंपनियों को बेचते हैं। खुद से आगे बढ़कर रामकुमार ने अन्य लोगों को भी इस व्यवसाय से जोड़ा। पराली के सीजन में तो यह संख्या 600 पहुंच जाती है।

ऐसे मिलता है काम: रामकुमार वाल्मीकि बताते हैं कि उन्होंने एक बेलर से शुरुआत की। लोगों को यह काम सिखाया और साथ जोड़ा। चाह को राह मिली। धीरे-धीरे 12 बेलर खरीद लिए। एक मशीन के साथ सीजन में 50 लोगों को काम मिलता है। पांच आदमी प्रतिदिन 200 क्विंटल पराली को ढुलाई करते हैं। 80 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से उन्हें मेहनताना दिया जाता है।

पेपर मिल और बिजली प्लांट से अनुबंध: रामकुमार वाल्मीकि ने पराली प्रबंधन के लिए एक बिजली प्लांट और एक पेपर मिल के साथ अनुबंध किया है। पेपर मिल में फिलहाल उन्हें 150 रुपये प्रति क्विंटल का भाव मिल रहा है, जबकि बिजली प्लांट में 167 रुपये का रेट है। वर्तमान में वह 10 हजार एकड़ में पराली प्रबंधन कर रहे हैं। इससे पर्यावरण को भी लाभ है।

जनसंख्या नियोजन

बांस से बज रही जीवन में समृद्धि की बांसुरी

शंभूनाथ चौधरी • समस्तीपुर

एक वर्ष पहले सिंपी कुमारी की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह अपने बच्चों को ठीक से पढ़ा सकें। घर में कोई बड़ी जरूरत होने पर कर्ज लेना पड़ता था। आर्थिक संकट का वह दौर अब नहीं रहा। वह हर महीने सात से नौ हजार रुपये कमा रही हैं। आर्थिक बदलाव की यह कहानी बिहार के समस्तीपुर में रोसड़ा की है। यहां करीब 150 महिलाओं की आर्थिक स्थिति बदल गई है। यह वेणु शिल्पकार (बांस कला) सुनील कुमार राय की पहल से संभव हुआ है। उनके संरक्षण में करीब 200 लोग बांस के उत्पाद बनाकर रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

बिहार में समस्तीपुर के रोसड़ा में बांस से उत्पाद बनाते कलाकार • जागरण

10 वर्ष की मेहनत से बदलाव: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बांस कला को पहचान के साथ गांव में आर्थिक बदलाव की कहानी एक दिन की नहीं है। सुनील कुमार राय ने इसमें 10 वर्ष तक कड़ी मेहनत की है। खुद असम में इस कला को सीखने के बाद गांव के लोगों को जोड़ना शुरू किया। बांस से समृद्धि की बात लोगों की समझ से परे थी, लेकिन सुनील की कलाकृतियों ने जब विभिन्न मंचों पर वाहवाही लूटी तो लोगों का रुझान बढ़ने लगा। कला और इसके उत्पादों को पहचान मिली तो बिहार के उद्योग विभाग एवं खादी बोर्ड ने भी रुचि दिखाई। अब तो यहां सामान्य सुविधा केंद्र की भी स्थापना हो गई है।

गरीबों को प्रशिक्षण

सुनील बताते हैं कि वह बेरोजगार युवकों के और अधिक से अधिक महिलाओं को जोड़कर काम करना चाहते हैं। आज 200 परिवारों में रोटी-रोटी की समस्या नहीं है। इनकी संख्या एक हजार करने के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण शिविर लगाए जा रहे हैं।

500 से अधिक प्रकार के उत्पाद: इस कला में लचीले किस्म के बांस का उपयोग होता है। इसे बेगूसराय, खगड़िया, वैशाली व दरभंगा से मंगाया जाता है। रोसड़ा के गौतम कुमार व प्रवीण शर्मा बताते हैं कि बांस से 500 से अधिक प्रकार के उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं।

इस खबर को विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें